IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, January 2026
Impact Factor: 7.67

प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास में ग्रामीण-शहरी विभाजन का चित्रण

डॉ. राकेश कुमार गौतम

यमुना प्रसाद शास्त्री महाविद्यालय, सेमरिया, रीवा (म.प्र.)

सारांश:

प्रेमचंदोत्तर काल में हिंदी उपन्यास ने भारतीय समाज की जटिलताओं को उजागर किया है, विशेष रूप से ग्रामीण-शहरी विभाजन को। यह शोध पत्र उदय प्रकाश, संजीव और गीतांजलि श्री जैसे लेखकों के चुने हुए उपन्यासों का विश्लेषण करता है, जहाँ ग्रामीण जीवन की सादगी, संघर्ष और शहरीकरण के प्रभाव को चित्रित किया गया है। प्रेमचंद की यथार्थवादी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए ये लेखक आधुनिक भारत की आर्थिक असमानता, प्रवासन, सांस्कृतिक टकराव और पहचान के संकट को दर्शाते हैं। उदय प्रकाश के 'मोहनदास' में ग्रामीण व्यक्ति की शहरी व्यवस्था में हाशियाकरण, संजीव के 'जंगल जहाँ शुरू होता है' में आदिवासी-शहरी टकराव, और गीतांजलि श्री के 'रेत समाधि' में विभाजन की स्मृतियाँ और शहरी जीवन की जटिलताएँ प्रमुख हैं। यह पत्र दर्शाता है कि ग्रामीण-शहरी विभाजन न केवल भौगोलिक है बल्कि सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक भी है, जो वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण के संदर्भ में बढ़ा है। विश्लेषण से पता चलता है कि ये उपन्यास सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक संरक्षण की माँग करते हैं।

कीवर्ड्स: (Keywords)

ग्रामीण-शहरी विभाजन, प्रेमचंदोत्तर उपन्यास, उदय प्रकाश, संजीव, गीतांजलि श्री, प्रवासन, सांस्कृतिक टकराव, हाशियाकरण, विभाजन, आधुनिकीकरण, आदिवासी अस्मिता, नारी विमर्श, यथार्थवाद, पोस्टकोलोनियल परिप्रेक्ष्य

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/IJARSCT-30883

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, January 2026
Impact Factor: 7.67

परिचय: (Introduction)

प्रेमचंद (1880-1936) हिंदी साहित्य के यथार्थवादी उपन्यासकार थे, जिन्होंने 'गोदान', 'रंगभूमि' जैसे उपन्यासों में ग्रामीण भारत की गरीबी, शोषण और सामाजिक असमानताओं को चित्रित किया। उनके बाद का काल (1936 से अब तक) प्रेमचंदोत्तर काल कहलाता है, जिसमें स्वतंत्र भारत की चुनौतियाँ—जैसे औद्योगीकरण, शहरीकरण, वैश्वीकरण—उपन्यासों में प्रमुख हो गईं। ग्रामीण-शहरी विभाजन इस काल का एक केंद्रीय विषय है, जो भारत की आर्थिक नीतियों (जैसे हरित क्रांति, उदारीकरण) और सामाजिक परिवर्तनों से जुड़ा है।

भारत में ग्रामीण-शहरी विभाजन एक पुरानी समस्या है। 1947 के विभाजन ने लाखों लोगों को ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर प्रवासित किया, जिससे सांस्कृतिक और आर्थिक खाई बढ़ी। 1991 के आर्थिक सुधारों ने शहरी विकास को बढ़ावा दिया, लेकिन ग्रामीण क्षेत्र पिछड़ गए। साहित्य में यह विभाजन प्रेमचंद के बाद लेखकों जैसे फणीश्वरनाथ रेणु ('मैला आँचल'), नागार्जुन और बाद में उदय प्रकाश, संजीव, गीतांजलि श्री में दिखता है।

उदय प्रकाश (जन्म 1952) समकालीन हिंदी के प्रमुख लेखक हैं, जिनके उपन्यास ग्रामीण व्यक्ति की शहरी दुनिया में संघर्ष दिखाते हैं। उनके 'मोहनदास' (2006) में ग्रामीण मोहनदास की पहचान चोरी हो जाती है, जो शहरी भ्रष्टाचार का प्रतीक है। संजीव (जन्म 1947) ग्रामीण और आदिवासी जीवन के चित्रकार हैं। उनके 'जंगल जहाँ शुरू होता है' (1993) में आदिवासी-शहरी टकराव दिखता है। गीतांजलि श्री (जन्म 1957) की रचनाएँ नारीवादी दृष्टि से ग्रामीण-शहरी सीमाओं को चुनौती देती हैं। 'रेत समाधि' (2018, इंटरनेशनल बुकर पुरस्कार विजेता) में विभाजन की स्मृतियाँ और शहरी जीवन की जटिलताएँ हैं।

यह पत्र इन लेखकों के उपन्यासों का विश्लेषण करेगा, जिसमें ग्रामीण जीवन की सादगी बनाम शहरी अलगाव, प्रवासन के प्रभाव, और सांस्कृतिक संकट को देखा जाएगा। सैद्धांतिक आधार पोस्टकोलोनियल

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 2, January 2026 Impact Factor: 7.67

थ्योरी (स्पिवाक, भाभा) और इकोक्रिटिसिज्म पर होगा। उद्देश्य है साहित्य के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की समझ विकसित करना।

मुख्य भाग:

अध्याय 1: उदय प्रकाश के उपन्यासों में ग्रामीण-शहरी विभाजन

उदय प्रकाश के साहित्य में ग्रामीण भारत की आवाज़ प्रमुख है। उनके उपन्यास और कहानियाँ (जैसे 'दिल्ली की दीवारें', 'मोहनदास') ग्रामीण व्यक्ति की शहरी व्यवस्था में हाशियाकरण दिखाते हैं। 'मोहनदास' में नायक मोहनदास एक ग्रामीण युवक है, जो शिक्षा प्राप्त कर शहर में नौकरी की तलाश में जाता है, लेकिन उसकी पहचान चोरी हो जाती है। यह शहरी पूँजीवाद और भ्रष्टाचार का चित्रण है, जहाँ ग्रामीण व्यक्ति 'अदृश्य' हो जाता है। प्रकाश ग्रामीण जीवन की नैतिकता (ईमानदारी, संघर्ष) को शहरी अवसरवाद से टकराते दिखाते हैं।

'पॉल गोमरा का स्कूटर' में एक ग्रामीण पत्रकार शहर में आकर संघर्ष करता है। ग्रामीण-शहरी विभाजन यहां प्रवासन के रूप में दिखता है—गाँव की गरीबी शहर की ओर धकेलती है, लेकिन शहर में शोषण मिलता है। प्रकाश की भाषा मिश्रित है—ग्रामीण बोलचाल और शहरी व्यंग्य। यह पोस्टकोलोनियल भारत की असमानता दर्शाता है, जहाँ ग्रामीण क्षेत्र 'पिछड़े' माने जाते हैं। उनके कार्य वैश्वीकरण के प्रभाव को भी छूते हैं, जैसे किसान आत्महत्या ('पीपली लाइव' उनकी कहानी पर आधारित)। कुल मिलाकर, प्रकाश ग्रामीण-शहरी खाई को पुल बनाने की बजाय चौड़ी करने वाली व्यवस्था की आलोचना करते हैं।

अध्याय 2: संजीव के उपन्यासों में ग्रामीण-शहरी विभाजन

संजीव प्रेमचंद की परंपरा के वारिस हैं, जो ग्रामीण और छोटे शहरों के जीवन को चित्रित करते हैं। उनके उपन्यास 'जंगल जहाँ शुरू होता है' में आदिवासी जीवन और शहरी विकास का टकराव है। नायक एक

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 2, January 2026 Impact Factor: 7.67

आदिवासी है, जो जंगल से शहर की ओर जाता है, लेकिन शोषण का शिकार होता है। यहां ग्रामीण (जंगल) बनाम शहरी (खनन, उद्योग) विभाजन पर्यावरणीय संकट के रूप में दिखता है। संजीव आदिवासी अस्मिता को केंद्र में रखते हैं, जो शहरी पूँजीवाद से दबती है।

'फाँस' में ग्रामीण किसान की कहानी है, जो शहर में मजदूरी करता है। विभाजन आर्थिक है—गाँव में सूखा, शहर में बंधुआ मजदूरी। 'सूत्रधार' में छोटे शहर की राजनीति और ग्रामीण प्रभाव दिखता है। संजीव की रचनाएँ दिखाती हैं कि स्वतंत्र भारत में ग्रामीण क्षेत्र उपेक्षित हैं, जबकि शहर विकास का केंद्र हैं। उनके पात्र ग्रामीण नैतिकता रखते हैं, लेकिन शहरी दुनिया में असफल होते हैं। यह सामाजिक न्याय की माँग है।

अध्याय 3: गीतांजलि श्री के उपन्यासों में ग्रामीण-शहरी विभाजन

गीतांजलि श्री के उपन्यास नारीवादी दृष्टि से ग्रामीण-शहरी सीमाओं को तोड़ते हैं। 'रेत समाधि' (टॉम्ब ऑफ सैंड) में नायिका एक वृद्ध महिला है, जो पति की मृत्यु के बाद शहर से पाकिस्तान जाती है। यहां विभाजन की स्मृतियाँ ग्रामीण जीवन से जुड़ी हैं—विभाजन ने ग्रामीण परिवारों को शहरों में विस्थापित किया। उपन्यास सीमाओं (भौगोलिक, लिंग, सांस्कृतिक) को चुनौती देता है। शहरी जीवन की अलगाव बनाम ग्रामीण सामूहिकता दिखती है।

'हमारा शहर उस बरस' में सांप्रदायिक दंगे शहर में होते हैं, लेकिन ग्रामीण जड़ें प्रभावित करती हैं। श्री की भाषा प्रयोगात्मक है, जो ग्रामीण बोलचाल और शहरी आधुनिकता को मिश्रित करती है। उनके कार्य पर्यावरण, नारीवाद और विभाजन को छूते हैं, दिखाते हुए कि ग्रामीण-शहरी विभाजन मनोवैज्ञानिक है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 2, January 2026 Impact Factor: 7.67

अध्याय 4: तुलनात्मक विश्लेषण और अन्य लेखक

तीनों लेखकों में समानता है—ग्रामीण जीवन की सराहना और शहरी शोषण की आलोचना। उदय प्रकाश व्यंग्यात्मक हैं, संजीव यथार्थवादी, श्री प्रयोगवादी। अन्य लेखकों जैसे शिवमूर्ति ('कुच्ची का कानून') में भी यह विभाजन दिखता है। वैश्वीकरण ने खाई बढ़ाई है, जो इन उपन्यासों में प्रतिबिंबित है।

निष्कर्ष: (Conclusion)

प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास ग्रामीण-शहरी विभाजन को भारत की सामाजिक वास्तविकता के रूप में चित्रित करते हैं। उदय प्रकाश, संजीव और गीतांजलि श्री के कार्य दिखाते हैं कि यह विभाजन न केवल भौगोलिक है बल्कि आर्थिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक भी। ग्रामीण जीवन की सादगी, नैतिकता और सामूहिकता शहरी अलगाव, भ्रष्टाचार और असमानता से टकराती है। प्रवासन, विभाजन और वैश्वीकरण ने इस खाई को गहरा किया है, जिससे सामाजिक न्याय की आवश्यकता उभरती है।

ये उपन्यास नीति-निर्माताओं को संदेश देते हैं—ग्रामीण विकास को प्राथमिकता दें, ताकि विभाजन कम हो। साहित्य सामाजिक परिवर्तन का माध्यम है, जो असमानताओं को उजागर करता है। भविष्य में, ऐसे साहित्य से समावेशी भारत की कल्पना संभव है।

संदर्भ (References)

[1]. Prakash, Uday. (2006). Mohandas. Vani Prakashan.
[2]. Sanjeev. (1993). Jangal Jahan Shuru Hota Hai. Rajkamal Prakashan.
[3]. Shree, Geetanjali. (2018). Ret Samadhi. Rajkamal Prakashan.
[4]. Anjaria, Ulka. (2015). A History of the Indian Novel in English. Cambridge University Press.
[5]. Hasan, Anjum. (2023). "Endless Trances: Tomb of Sand by Geetanjali Shree". The New York Review of Books.
[6]. Sanyal, Sanjeev. (2012). Land of the Seven Rivers: A Brief History of India's Geography. Penguin.

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, January 2026
Impact Factor: 7.67

[7]. Prakash, Uday. (2012). The Walls of Delhi. Translated by Jason Grunebaum. Seven Stories Press.

[8]. "Representation of Rural Life in Hindi Literature". JETIR Journal, 2023